प्राक्कथन

शोध–प्रबन्ध लेखन की यात्रा के दौरान मुझे गुरु ग्रन्थ साहिब में संकलित गुरु नानक देव जी द्वारा रचित निम्नलिखित पंक्तियाँ सदैव स्मरण रहीं–

''नदीआ वाह विछुंनिआ
मेला संजोगी राम ।।''

अर्थात् नदियों से बिछुड़े हुए बहावों का पुनः मिलाप ईश्वरीय संयोग से ही होता है। अतः यह ईश्वरीय संयोग ही था कि जिस मृणाल पाण्डे को मैं बचपन में टी०वी० पर देखकर उनके व्यक्तित्व से बेहद प्रभावित हुई थी, उन्हीं पर शोध–कार्य करने का सुअवसर प्रो० नीरजा सूद ने अपने निर्देशन एवं सान्निध्य में प्रदान किया। मैं अपनी श्रद्धेय निर्देशिका के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करती हूँ। जिन्होंने न केवल मेरा पथ आलोकित किया अपितु अपनी सहृदयता, उदारता तथा प्रोत्साहन के द्वारा यह कार्य सम्पन्न करवाया तथा मेरी बाल्यावस्था की अपूर्ण इच्छा को भी पूर्ण किया। उनसे मैंने केवल शोध–कार्य विषयक ज्ञान ही प्राप्त नहीं किया अपितु जीवन–यथार्थ के विषय में भी बहुत कुछ प्राप्त किया है जो अन्यथा उपलब्ध नहीं हो सकता था। यह शोध–प्रबन्ध उनकी जीवनदायिनी सकारात्मक प्रेरणा का साकार रूप है। उनके प्रति शब्दों द्वारा ऋण व्यक्त करके मैं कभी ऋण मुक्त नहीं हो सकती।

मृणाल पाण्डे वह साहित्यिक मेरू है जो वर्तमान समय में सत्तर वर्ष की जीवनावधि में भी निरन्तर साहित्यिक साधना में तल्लीन है। उनका समाज तथा जीवन के प्रति यह समर्पण निश्चित रूप से सराहनीय है। एक पत्रकार होने के नाते उनकी दृष्टि 'नीर क्षीर विवेकमयी' है जो सीधे मर्म तक पहुँचती है और भीतर की पीड़ा को उजागर करती है। वे समाज से भी जुड़ती हैं और तथ्यों से भी, फिर उन दोनों के सम्यक् सन्तुलन से जो रचना सृजित होती है वह कपोल कल्पना या मात्र भावनात्मक ऊहापोह नहीं होती, यथार्थवादी होती है और मृणाल पाण्डे इस पर पूर्णतः खरी उतरती हैं।

मृणाल पाण्डे का नारी सम्बन्धी चिन्तन–मनन स्त्री–शक्ति की खोज है। इनके स्त्री को पहचान एवं प्रतिष्ठा दिलवाने के तरीके भी अलग हैं। इन्होंने स्त्री को

शक्तिशाली रूप में स्वीकारने की सदैव हिमायत की है, जिससे सम्पूर्ण स्त्री–वर्ग में चेतनता का स्वर प्रस्फुटित हुआ है। मृणाल पाण्डे के लेखन की यह विशेषता है कि उनकी कृतियाँ मानस–पटल पर चिन्तन का रोपण करती हैं, कि विकास के आँकड़े जो बढ़ा–चढ़ाकर सामाजिक विकास, सामाजिक समता का दावा करते हैं, वे वास्तव में कितने सत्य हैं और कितने तथ्यहीन हैं। यही कारण है कि मैंने कथाकार मृणाल पाण्डे पर शोध–कार्य करने का निर्णय लेकर **'मृणाल पाण्डे के कथा–साहित्य में सामाजिक सरोकार'** विषय का चयन किया। प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध की संयोजित रूपरेखा इस प्रकार है–

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध आठ अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय : 'विषय उपस्थापन' है, जिसमें विषय का स्पष्टीकरण एवं परिसीमन करते हुए विषय–चयन के औचित्य को प्रतिपादित किया गया है। यह अध्याय शोध–प्रबन्ध की रूपरेखा को प्रस्तुत करता है।

द्वितीय अध्याय : 'सामाजिक सरोकार' के सैद्धान्तिक विवेचन से सम्बन्धित है। प्रस्तुत अध्याय में व्यक्ति, परिवार तथा समाज की परिभाषा एवं स्वरूप को स्पष्ट करते हुए, उनके पारस्परिक सम्बन्धों का उद्‌घाटन किया गया है तथा सामाजिक सरोकारों के महत्त्वपूर्ण घटकों यथा 'पारिवारिक आधार', 'सामाजिक व्यवस्था', 'सांस्कृतिक प्रतिमान' तथा 'सामाजिक परिवर्तन बनाम स्त्री की बदलती रूढ़ छवि' का निरूपण किया गया है। यह अध्याय शोध–प्रबन्ध की आधार–भूमि अभिव्यक्त करता है।

तृतीय अध्याय : 'मृणाल पाण्डे : साहित्य सृजन' में मृणाल पाण्डे की बहुआयामी सृजनात्मकता, उनकी पत्रकारिता की यात्रा, विशिष्ट उपलब्धियाँ एवं पुरस्कार, उनके द्वारा रचित उपन्यास तथा कहानियों का अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है तथा समकालीन परिदृश्य में मृणाल पाण्डे की भूमिका को भी व्याख्यायित करने का प्रयास किया गया है।

चतुर्थ अध्याय : 'पारिवारिक आधार' के अन्तर्गत मृणाल पाण्डे के कथा–साहित्य में संयुक्त एवं एकाकी परिवार के सकारात्मक पक्ष को ही नहीं अपितु नकारात्मक पक्ष को भी उभारा गया है। बनते–बिगड़ते दाम्पत्य सम्बन्ध, पीढ़ीगत अंतराल से बढ़ता

तनाव, बुजुर्गों के प्रति बढ़ती संवेदनहीनता तथा एकाकीपन एवं संत्रास को भी कथा–साहित्य के सन्दर्भ में विश्लेषित किया गया है।

पंचम अध्याय : 'सामाजिक व्यवस्था' में मृणाल पाण्डे के कथा–साहित्य में वर्णित विभिन्न सामाजिक पहलुओं को उभारा गया है। स्वतन्त्रता–पूर्व तथा स्वतन्त्रता के पश्चात् भारतीय समाज में अनेक परिवर्तन घटित हुए, देश की राजनीति से भी अनेक विसंगतियाँ जन्मनें लगीं जिसके परिणामस्वरूप सामाजिक ढांचा अव्यवस्थित होने लगा। अर्थ के बढ़ते वर्चस्व के कारण मनुष्य की विवशताएँ भी बढ़ रही हैं, मानवीय सम्बन्ध अर्थ के घेरे में कैद हो कर रह गये हैं तथा बेरोजगारी, निर्धनता एवं महँगाई मुँह खोले खड़ी हैं, इन्हीं समस्याओं का रेखांकन इस अध्याय का विवेच्य विषय बना है।

षष्ठ अध्याय : 'सांस्कृतिक प्रतिमान' से सम्बन्धित है। प्रस्तुत अध्याय में मृणाल पाण्डे के कथा–साहित्य में लोक–साहित्य के विविध संदर्भों एवं भारतीय संस्कृति से जुड़े अनेक पक्षों को उद्घाटित किया गया है। धार्मिक मान्यताओं तथा धर्म में मनुष्य की आस्था–अनास्था का विवेचन करते हुए धार्मिक अंधविश्वास तथा नैतिक मूल्यों के टकराव एवं विघटन का भी मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है।

सप्तम अध्याय : 'सामाजिक परिवर्तन बनाम स्त्री की बदलती रूढ़ छवि' को चित्रित करता है। इस अध्याय में मृणाल पाण्डे के उपन्यासों तथा कहानियों के संदर्भ में सामाजिक परिवर्तन के फलस्वरूप स्त्री की भूमिका में आये परिवर्तन का विस्तृत विश्लेषण किया गया है।

अष्टम अध्याय : 'मृणाल पाण्डे की भाषा एवं शैली' से सम्बन्धित है। इस अध्याय में लेखिका की कथा–भाषा का परिचय, भाषागत विशेषताएँ, जैसे – प्रतीकात्मक भाषा, बिम्बात्मक भाषा, व्यंग्यपूर्ण भाषा, डॉटस भाषा, हिंग्लिश भाषा, आँचलिक, देशज तथा अन्य भाषा शब्दों का प्रयोग, ध्वन्यात्मक शब्द, मुहावरे तथा लोकोक्ति प्रयोग आदि शीर्षकों का विवेचन किया गया है तथा शैलीगत विशेषताओं को भी रेखांकित किया गया है।

'उपसंहार' प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध का अंतिम पड़ाव है। इसके अन्तर्गत सारांश, उपलब्धियाँ एवं भावी शोध–संकेतों को समाविष्ट किया गया है। अन्त में, **परिशिष्ट**

के अन्तर्गत सन्दर्भ साहित्य सूची, शब्दकोश, शोध–प्रबन्ध, पत्र–पत्रिकाओं आदि का विवरण दिया गया है।

शोध–कार्य की संपूर्णता हेतु पंजाब विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं सभी गुरुजन का आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने इस साधना में अपना प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष योगदान दिया है। हिन्दी–विभाग के कार्यालय के सदस्यों के प्रति भी अपार कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ के राजनीति विज्ञान तथा महिला अध्ययन विभाग की पूर्व अध्यक्ष, परम आदरणीय इमेरिट्स प्रो० पैम राजपूत जी की उदार अनुकम्पा के लिए आजीवन अनुगृहीत रहूँगी क्योंकि शोध–कार्य हेतु उन्होंने मुझे प्रेरित एवं सदैव प्रोत्साहित कर अपार सहयोग दिया। अतः मैं हृदय से उनके प्रति आभार प्रकट करती हूँ।

शोध–प्रबन्ध के कठिनतम क्षणों में और दुःसाध्य साधना की अभीष्ट सिद्धि की प्राप्ति हेतु मैं अपनी माताजी श्रीमती मलकीत कौर तथा पिताजी स० गुरतेज सिंह की अत्यन्त ऋणी हूँ, जिन्होंने मेरी जीवन दिशा को आलोकित किया तथा ममता भरे आशीर्वाद से सदैव मुझे प्रोत्साहित किया। अनुज भाई अवतार सिंह तथा भाभी अमनदीप कौर का प्रोत्साहन एवं सहयोग मुझे इस कठिन लक्ष्य की प्राप्ति में हमेशा मिलता रहा। नन्हा फूल भतीजा हरजोत, जिसकी मुस्कान मुझे इस कठिन लक्ष्य की प्राप्ति हेतु सदैव प्रेरित करती रही है।

शोध–कार्य को सम्पन्न करने में मेरे जीवन साथी स० बलराज सिंह का अतुलनीय सहयोग रहा है, उनके द्वारा किया गया उत्साहवर्धन मेरे टूटते हुए विश्वास में पुनः प्राणों का संचार करता रहा। उनके अपार स्नेह से मैं कभी उऋण नहीं हो सकती।

शोध–कार्य के लिए जिस निरन्तर साधना की आवश्यकता पड़ी उसके लिए अपनी बेटी हरनिध के हिस्से का समय कुर्बान करना पड़ा जिसकी क्षतिपूर्ति कभी नहीं की जा सकती। उसकी भोली तथा निश्छल जिज्ञासाओं ने हमेशा मुझमें नये जोश का संचार कर प्रेरित किया।

किसी भी शोध–कार्य की प्रस्तुति तब तक संभव नहीं हो सकती जब तक वह ज्ञान के संचित भण्डार पुस्तकालय से नहीं जुड़ता। प्रस्तुत शोध–कार्य के लिए

मैंने अपने विभागीय पुस्तकालय के अतिरिक्त निम्नांकित पुस्तकालयों में जाकर शोध–प्रबन्ध के विषय से सम्बन्धित सामग्री का अध्ययन किया–

- ए०सी० जोशी पुस्तकालय, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़
- टी०एस० सेन्ट्रल लाइब्रेरी, सैक्टर–17, चण्डीगढ़
- स्टेट लाइब्रेरी, सैक्टर–34, चण्डीगढ़
- भाई काहन सिंह नाभा पुस्तकालय, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला
- केन्द्रीय पुस्तकालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र
- केन्द्रीय पुस्तकालय, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
- केन्द्रीय पुस्तकालय, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

मैं उपर्युक्त पुस्तकालयों के पदाधिकारियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, इनके सहयोग के अभाव में सामग्री संकलन का कार्य संभव नहीं था।

मैं अपनी घनिष्ठ मित्र सीमा ठाकुर तथा उन समस्त मित्रजनों, सुधीजनों एवं शुभचिन्तकों की भी कृतज्ञ हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से अपना सहयोग देकर मुझे कृतार्थ किया।

टंकण की स्वच्छता एवं सुंदरता के लिए मैं श्री संदीप कुमार की हृदय से आभारी हूँ, उनके कुशल टंकण एवं मुद्रण विषयक सहयोग से ही यह शोध–कार्य अंतिम रूप ले सका।

शोध–प्रबन्ध की टंकण सम्बन्धी त्रुटियों का यथासंभव निराकरण करने का प्रयास किया गया है। पूर्ण प्रयास के पश्चात् भी अवशिष्ट टंकण त्रुटियों के लिए मैं अग्रिम रूप से क्षमा प्रार्थी हूँ। शोध–प्रबन्ध अत्यन्त विनम्रता के साथ विद्वजनों के अवलोकनार्थ प्रस्तुत करती हूँ।

विनीत

दिनांक

पर्वज्योत कौर